आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:10/12/2022; Published:31/01/2023

रास्ता भर रौशनी रहे

डॉ. आशा रब्ब

मूल:डॉ. कविता एस. कुसुगल (कन्नड)

पापा
सौफं देंगे तो

'मम्मी, मैं पापा की बेटी।'

यदि मैं चीले बना दूँ

'पापा, मैं मम्मी की बेटी।'

कहती है

साल दो साल की

ये लड़की।

विश्वास नहीं कि

कल ये

मेरी बेटी बन के रहेगी

फिर भी मैं

जला लेती हूँ

मैं अपनी भीतर की ज्योति

ताकि

बिटिया, तुम जिस पथ पर चलो

वहाँ बस प्रकाश हो।

****